International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 03(I), July - September, 2021, pp.194-197

भारत में जनसंख्या वृद्धिः कारण और निवारण

डा. शकुन्तला मीना*

सार

जनसंख्या की दृष्टि से चीन के बाद भारत का विश्व में दूसरा स्थान हे। 1901 में भारत भी जनसंख्या 23.8 करोड़ थी जो बढ़कर 2001 में 102.7 करोड़ हो गयी अर्थात 100 वर्षों में लगभग 4 गुणा से ज्यादा वृद्धि हो गई। 1 मार्च 2011 में भारत की जनसंख्या 1,2101,93422 होगी जिसमें पुरूष 6,23700,000 स्त्रीयां 586400000 यह वृद्धि 2001–2011 के दौरान 181 मिलियन है । देश की जनसंख्या बढ़ी तीव्र गति से बढ़ रही है। जिसकी वजह ऊंची जन्म दर, गर्म जलवायू, विवाह की अनिवार्यता, धार्मिक अन्धविश्वास, शिक्षा का अभाव, परिवार नियोजन के प्रति उदासीनता, भाग्यवादियता, मनोरंजन के साधनों का अभाव ये कारण जनसंख्या वृद्धि में अहम भूमिका निभा रहे हैं देश के सन्तुलित आर्थिक विकास के लिऐ इसे नियन्त्रण करना आवश्यक है इसके लिए स्वास्थ सुविधाओं का विस्तार हो लोगों में जागरूकता शिक्षा का प्रसार, परिवार नियोजन के साधनों का प्रसार व प्रचार जीवन स्तर में सुधार इत्यादि के द्वारा जनसंख्या वृद्धि में नियन्त्रण करना आवश्यक है क्योंकि वर्तमान में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति बनी हुई है जिससे बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, चोरी,डकेती व इत्यादि समाज में बढ रहे है। अतः सरकारी प्रयासों व जननाग्रति लाकर जनसंख्या नियन्त्रण करके ही साधनों को उचित वितरण, उच्च जीवन प्रत्याशा को बनाया जा सकता है। जिससे देश की जनसंख्या भी खुशहाल होगी व देश निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर होगा भारत देश विकसित देशों की श्रेणी में आ सकेगा 11 जुलाई का पूरे विश्व में जनसंख्या दिवस मनाया जाता जिसका उद्देश्य जनसंख्या नियंत्रण का संदेश देना है।

शब्दकोशः *भाग्यवादिता, जनजाग्रति, परिवारनियोजन, बेरोजगारी, जीवन प्रत्याशा।*

प्रस्तावना

जनसंख्या की दृष्टि से चीन के बाद भारत का दूसरा स्थान है। 1980 में मध्य विश्व की कुल जनसंख्या 4.4 अरब थी। भारत में 1981 की जनगणना के अनुसार 68.5 करोड़ थी 1901 में 23.8 करोड़ थी जो 2001 में बढ़कर 121 करोड के लगभग हो गई अर्थात 100 वर्षों में 4 गुणा जनसंख्या में बढ़ोतरी हुई वर्तमान में भारत की जनसंख्या 133 करोड़ के लगभग है जिसमें राज्यों की दृष्टि से देखे तो उत्तर प्रदेश की जनसंख्या सबसे अधिक है भारत की जनसंख्या में विस्फोट वृद्धि हो रही है देश का हर कोना गांव, शहर, नुक्कड ज्यादा आबादी का जीता जागता सबूत है। शहर रेलवे स्टेशन, बस स्टेण्ड, बाजार, मॉल, सड़क हाइवे, धार्मिक समारोह, मेले, कार्यक्रमों का आयोजन इन सभी जगहों को दिन के समय भीड़ से भरा देख सकते हैं। इससे यह पता चलता है कि देश की जनसंख्या किस गति से बढ़ रही है। इस गति से जनसंख्या बढ़ती रही तो 2025 तक भारत चीन को भी पीछे छोड़ देगा और विश्व की सबसे अधिक आबादी वाला देश बन जाएगा देश में उपलब्ध साधन जनसंख्या के सामने सूक्ष्म साबित होंगे जनसंख्या वृद्धि 1901 में जो 23.3 करोड़ थी जो 2017 में 133 करोड़ के लगभग है। जनसंख्या विस्फोट की स्थिति को देखते हुए 11 जुलाई 1989 को विश्व जसंख्या मनाने की शुरूआत संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की गर्वनिग काउसिंल द्वारा स्थापित किया था उस समय विश्व की जनसंख्या पांच अरब तक पहुंच गई थी। इस दिवस मुख्य उदेश्य जनसंख्या वृद्धि पर लोगों को जागरूक करना, लिग समानता, परिवार नियोजन, मातृ स्वास्थ्य आदि मुद्दों पर जागृत करना था।

---

[6] सहायक आचार्य ई.ए.एफ.एम., महारानी श्री जया महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान।

जनसंख्या वृद्धि के लिए अनेक कारक जिम्मेदार है जो निम्न प्रकार है।

- **शिक्षा का अभाव–** देश में 2001 की जनगणना के अनुसार साक्षरता का प्रतिशत 65.38 व 2011 में साक्षरता प्रतिशत 74 हो गया लेकिन महिलाओ की साक्षरता दर बहुत कम थी ज्ञान के अभाव में इनको परिवार नियोजन सम्बन्धी जानकारी नही हो पाती जिसके फलस्वरूप संन्तानोत्पत्ति होती रहती है। उच्च शिक्षा में तो भारत में 11 प्रतिशत लोग ही पंजीयन कराते है।
- **बाल विवाह एंव बहु विवाह–** भारत में बाल विवाह की प्रथा प्रचलित होने के कारण सरकार द्वारा निर्धारित उम्र स्त्री की 18 वर्ष व पुरूष की 21 वर्ष होने के बावजूद भी कम उम्र में विवाह हो जाता है। जिसके कारण कम उम्र में ही सन्तानोत्पत्ति होने लगती है। जो कि जनसंख्या वृद्धि में अहम भूमिका निभाती है साथ ही देश में कम उम्र के साथ बहुविवाह की प्रथा प्रचलित होने के कारण भी सन्तानोत्पत्ति के कारण जनसंख्या बढ़ी है। राजस्थान में 35.4 प्रतिशत व भारत में 26.8 प्रतिशत बाल विवाह होते हैं।
- **विवाह की अनिवार्यता–** भारत में विवाह को एक धार्मिक एंव सामाजिक आवश्यकता माना है। सन्तान की शादी करना माता पिता का दायित्व माना जाता है और माता पिता सन्तान की शादी करके शीघ्र अपने दायित्वों से मुक्त होना चाहते है जिस व्यक्ति का विवाह नही होता है उसे समाज में हीन दृष्टि से देखा जाता है अतः विवाह अनिवार्यता भी जनसंख वृद्धि का एक कारक है।
- **संयुक्त परिवार प्रणाली–** के कारण बच्चों के पालन पोषण का दायित्व माता–पिता पर नही रहता है। जिसके कारण अधिक सन्तान उत्पत्ति से होने वाली कठिनाईयों का अहसास नही होती और जनसंख्या वृद्धि को प्रोत्साहन मिलता है।
- **बड़े परिवार की इच्छा–** भारत में बड़े परिवार को प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा जाता है अतः बड़े परिवार की भावना के कारण जनसंख्या बड़ी है।
- **धार्मिक अन्ध विश्वास –** भारत में हिन्दु धर्म में पुत्र के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है। कन्या दान से बड़ा कोई दान नहीं है। इसी इच्छा के चलते सन्तानोंत्पत्ति ज्यादा होती है।
- **सामाजिक सुरक्षा का अभाव–** देश में प्रत्येक माता–पिता सन्तान को बुढापे का सहारा समझते है इसके बिना व सामाजिक सुरक्षा का अभाव पैदा होता है। इसलिए वह सन्तानोत्पत्ति को महत्व देते हैं।
- **परिवार नियोजन के प्रति उदासीनता–** लोगों में शिक्षा का अभाव व परिवार नियोजन सम्बन्धि कार्यक्रमों के प्रति उदासीनता के कारण भी जनसंख्या विस्फोट की स्थिति बनी हुई है। भारत में (2005–2006) में 6.9 प्रतिशत विवाहित महिला ही गर्भनिरोधक का प्रयोग कर रही है।
- **शिशु मृत्यु दर का ऊँचा होना–** देश में शिशु मृत्यु दर उच्च होने के कारण बच्चों के स्वस्थ व जीवित रहने की सम्भावना कम होती है। इसी वजह वे एक सन्तान के स्थान पर अधिक सन्तान पैदा करते है। भारत में 1990 में शिशु मृत्यु 34 लाख थी।
- **भाग्यवादिता–** भारत में बच्चों को भगवान की देन मानते है। जिसके कारण व्यक्ति सन्तानोत्पत्ति रोकने का प्रयास ही नहीं करते है जिससे जनसंख्या अनवरत गति से बढ़ती रहती है।
- **मनोरंजन के साधनों का अभाव–** देश ग्रामीण लोग गरीब व अशिक्षित होने कारण संभोग को ही मनोरंजन का साधन मानते है सन्तानोंत्पत्ति होती रहती है। जनसंख्या बढ़ती जाती है।
- **मृत्युदर में कमी–** स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार के कारण मृत्यु दर में कमी आई मनुष्यों की जीवित रहने की सम्भावनाए बढ़ी है जन्मदर तेजी से बढ़ रही जिससे जनसंख्या बढ़ोतरी हो रही है। अकाल और महामारियों पर नियंत्रण पा लिए जिससे भारी जनहानी से बचा जा सके। शिशु मृत्यु दर जो 1990 में 34 लाख थी वह 2019 में घटकर 679000 रह गई है।
- **जीवन प्रत्याक्षा में वृद्धि–** स्त्री व पुरूष दोनों जीवन जो पहले 36 से 37 वर्ष थी वो बढ़कर 69 के करीब हो गई है।

- **बड़ी मात्रा में शरणाथियों का आगमन –** नेपाल,बंग्लादेश,श्रीलंका,से तमाम शरणार्थियों का आवगमन से जनसंख्या घनत्व में वृद्धि हुई है।
- **प्रवासी भारतीय की वापसी–** भारत मूल के अनेक व्यक्तियों को श्रीलंका,नेपाल,केन्या,अफ्रीका व वर्मा इत्यादी देशों से निकाल दिये है वो वापस भारत में आकर रह रहे है।
- **घुसपैठ–** पाकिस्ताान बंग्लादेश, पश्चिम बंगाल, बिहार, राजस्थान, असम, उतराखंण्ड आदि क्षेत्र घुसपैठ की समस्या से ग्रस्ति है जिससे जनसंख्या ज्यादा बढ़ी है।

निवारण

- जनसंख्या पर स्थायी एंव स्वैच्छि नियन्त्रण के लिए शिक्षा प्रसार ही एक मात्र उपाय
- लोगों में जाग्रति लाना व छाटे परिवार के महत्व को समझाना जिससे जनसंख्या वृद्धि में कमी लाई जा सके।
- नसबन्दी, ओपरेशन एंव कोपरटी निवेशन की सेवाऐं गुणवत्ता के साथ प्रदान की जाये जिससे लोग आगे आयें।
- सरकार द्धारा राजनेताऔं पंचायत, नगर पालिका, सहकारिता कानून में संशोधन, राज्य में नौकारी प्राप्त करने हेतु कानून संशोधन कर दो संतान की अवधारणा को कढाई से लागू किया जाऐ।
- **देरी से विवाह करना–** जनसंख्या नियन्त्रण के लिए विवाहयोग्य आयु में वृद्धि करनी चाहिए हमारे यहां लडकी की उम्र 18 वर्ष व लडके की उम्र 21 वर्ष है लेकिन शादी कम उम्र में कर दी जाती है। अतः विवाह की आयु का कड़ाई से पालन होगा तभी इससे सन्तानोत्पत्ति की दर में गिरावट आएगी।
- **परिवार कल्याण कार्यक्रमों को प्रभावी ढ़ग से लागू करना–** खाली औपचारिकता न हो दो बच्चों से अधिक की अनुमति नहीं होनी चाहिए।
- **सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था–** व्यक्ति अपने आपको समाज में सुरक्षित व बुढ़ापे के लिए सन्तानोत्पत्ति करता है उसे सामाजिक बीमा/वृद्धावस्था पेंशन, बेरोजगारी भत्ता, दुर्घटना के समय सहायता आदि व्यवस्थायें कम सन्तान के प्रति प्रेरित करेगी।
- **विवेकहीन मातृव पर रोक–** भारतीय समाज में शिक्षा के अभाव में बिना सोचे समझे अधिक बच्चों की मां बनना चाहती है। इसे रोका जाए तभी जनसंख्या वृद्धि रूक सकेगी।
- ग्रामीण व अशिक्षित जनता के लिए सस्ते मनोरंजन के साधन विकसित करना तभी जनसंख्या वृद्धि वाले वर्ग में जनसंख्या वृद्धि को रोक सकेगें।
- कानूनों की कडाई से पालना होनी चाहिऐ भारत सरकार को कडाई से शारदा एक्ट लागू करना चाहिए।
- प्रभावी जनसंख्या नीति 2000 को कडाई से लागू किया जाए।
- भारत में परिवार कल्याण कार्यक्रम सरकारी स्तर पर 1952 से चालू है सरकार को ढुलमुल रवैया छोडकर इसे कडाई से लागू करना चाहिए जिससे जनसंख्या नियंत्रण हो सके।
- घुसपैठ पर प्रभावी नियंत्रण हो पडोसी देशो से लोग घूमने फिरने आते है फिर वापस नहीं जाते है इस की संख्या लगभग 2 से 3 करोड़ के करीब इसके लिए प्रभावी कानून बनाने की सख्त आवश्यकता है।

सुझाव

जनसंख्या दिवस व जनसंख्या नियन्त्रण नीति बनाने से ही इस भयावह स्थिति से नहीं निपटा जा सकते है सरकार के लिए इसमें शाएदा एक्ट का कडाई से पालन करना परिवार नियोजन कार्यक्रमों नुक्कड, नाटक सभाओं द्वारा ग्रमीण व अशिक्षित लोगों को जाग्रति करना क्योंकि जनसंख्या राष्ट्र की सम्पत्ति भी व दायित्व भी लोगों में भाग्यवादित, रूढिवादिता, अधिक सन्तान प्रतिष्टा प्रतीक, बेटे द्वारा मोक्ष की प्राप्ति बालविवाह

इन सबको जड से खत्म करना है क्योकि जिस दर से जनसंख्या बढ़ रही है भारत विकास दृष्टि से तो नहीं लेकिन जनसंख्या की दृष्टि से प्रथम स्थान पर जरूर आ जाएगा। जिसके कारण देश बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, चोरी डकैती, खाद्यान्न की कमी, साधनों का असमान वितरण, गरीबी, आवास की समस्या, नगरीकरण, स्वास्थय सेवाओं पर भार इन सब से छुटकारा पाकर व देश की जनसंख्या नियन्त्रण नीति प्रभावी बनाकर कार्यरत स्वास्थ कर्मचारियों को इस बात के लिए प्रशिक्षण दिया जाए जिससे वे आम जनता को अपने पुनुरूत्पादनीय व्यवहार को बदलने में प्रेरित कर सके ऐसी योजना लाई जायें जिससे लोग विवाह कि आयु स्थगित करें व विवाह पश्चात बच्चों को सीमित करने के लिए प्रेरित करे जनसंख्या नियंत्रण व स्थिरिकरण से लोग रोजगार मिलना साधन समुचित वितरण व संतुलित उपयोग सम्भव हो देश लोग खुशहाल रहेंगे तो देश का तीव्र गति से आर्थिक विकास होगा भारत विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय अर्थव्यवस्थाः– एल.एन.कोली लक्ष्मीनारायण अग्रवाल 2016 पृष्ठ न. 347–376
2. भारत में आर्थिक पर्यावरण–जाट, वशिष्ठ अजमेर बुक कम्पनी, जयपुर 2010–2011 पृष्ठ न. 29.1–29.6
3. भारत में आर्थिक पर्यावरण– डा. वी.पी.गुप्ता, डा. एच.आर. स्वामी आर बी डी प्रकाशन जयपुर 2010–2011 पृष्ठ स. 33.1 से 33.20
4. भारतीय अर्थव्यवस्था हिमालय पब्लिकेशन हाऊस 2010 एस.के.मिश्र, वी.के.पुरी पृष्ठ न. 134–135,147
5. 2018 1/SRSET/Volume 4 Issue 7, March/April/2018/ISSN: 2395-1990 Page no. 684-692
6. Research Review International Journal of Multi Disiciplinary ISSN:2455-3085 (Online) Aug. 2018
7. समाजशास्त्र सहायक सामग्री, 734–739 शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार 2014–2015 पृष्ठ संख्या 6 से 8
8. समकालीन भारत 1, सामायिक विज्ञान एन.सी.ई.आर.टी., कक्षा 9 पाठ 6 पृष्ठ 13 से 14
9. International Journal of Scientific Research - Volume 5/Issue-3/ March 2016 ISSN No. 2277-8179/IF 3508/IC Value 612-614
10. भारतीय अर्थव्यवस्था रूद्र दत्त, के.पी.एम. सुन्दरम 1998, एस.चन्द्र एण्ड कम्पनी लि. रामनगर नई दिल्ली
11. परिवार कल्याण विभाग प्रगति प्रतिवेदन, वर्ष 2011–2012 निदेशालय चिकित्सा, स्वाथ्य एंव परिवार कल्याण सेवाऐं, राजस्थान पृष्ठ स.–10–11

❖◆❖